हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

NAAC A++

प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी
वरिष्ठ आचार्य / अध्यक्ष

मोबाईल – 9412207200
ई० मेल – nclohani@gmail.com

पत्रांक :

दिनांक : 16 फरवरी 2024

सेवा में,

समस्त अध्यक्ष, संयोजक, समन्वयक,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

विषय : दिनांक 19–20 फरवरी 2024 को आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी **'हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान'** में प्रतिभागिता हेतु आमंत्रण।

आदरणीय महोदय / महोदया,

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ एवं केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 19–20 फरवरी 2024 को दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी **'हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान'** विषय पर **अटल सभागार** में आयोजित की जा रही है। संगोष्ठी में निम्नांकित सत्र होंगे :–

दिनांक : 19 फरवरी 2024 –

उद्घाटन सत्र, प्रथम सत्र – विदेशों में हिंदी, द्वितीय सत्र – हिंदीतर भाषी राज्यों में हिंदी, **दिनांक 20 फरवरी 2024 –**

तृतीय सत्र – शोध पत्र वाचन, चतुर्थ सत्र – मीडिया, सोशल मीडिया एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हिंदी, समापन सत्र।

शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम दिनांक 16–19 फरवरी 2024

इसके साथ ही केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विदेशी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अधिकारियों का शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम दिनांक 16–19 फरवरी 2024 विश्वविद्यालय में रहेगा। इस शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम में केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विभिन्न अध्ययन केन्द्रों पर हिंदी अध्ययन करने वाले विद्यार्थी शामिल होंगे। जिसमें बेलारूस, बुलगारिया, श्रीलंका, त्रिनिडाड एवं टोबेगो, तजाकिस्तान, दक्षिण कोरिया, इजिप्ट, थाईलैंड, रूस देशों के विद्यार्थी **दिनांक 17 फरवरी 2024 को अपराह्न 03:00 बजे अटल सभागार में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी देंगे।**

अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया कार्यक्रमानुसार आप सादर आमंत्रित हैं कृपया विभाग के शिक्षकों तथा शोधार्थियों, विद्यार्थियों को भी कार्यक्रम में प्रतिभागिता करने हेतु सूचना प्रदान करने का कष्ट करें।

आपकी उपस्थिति से हमारे विद्यार्थी, शिक्षक, शोधार्थी, लाभान्वित होंगे। कृपया कार्यक्रम में पधारकर हमें गौरवान्वित करें।

सधन्यवाद,

भवदीय,

(प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी) 16/2
अध्यक्ष हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

अटल सभागार - 19 फरवरी 2024

प्रथम सत्र - विदेशों में हिंदी **02:00-03:45**

अध्यक्षता : प्रो. वेद प्रकाश वटुक, पूर्व निदेशक, फोकलोर
विशिष्ट अतिथि : डॉ. मृदुल कीर्ति, वरिष्ठ साहित्यकार, ऑस्ट्रेलिया
विशिष्ट अतिथि : श्रीमती जय वर्मा, साहित्यकार, ब्रिटेन
विशिष्ट अतिथि : डॉ. विजया सती, पूर्व विजिटिंग प्रोफेसर, हंगरी
विशिष्ट अतिथि : डॉ. राकेश बी. दुबे, वरिष्ठ सलाहकार हिंदी, क्यू.सी.आई. दिल्ली
ऑनलाईन सान्निध्य : पद्मश्री तोमियो मिजोकामी, वरिष्ठ शिक्षक एवं साहित्यकार जापान,
डॉ. निकोला पोज्जा, लोजान विश्वविद्यालय, स्विटजरलैंड,
डॉ. रामप्रसाद भट्ट हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी,
प्रो. संध्या सिंह, साहित्यकार, सिंगापुर,
प्रो. शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल,
प्रो. वेद प्रकाश, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान
संचालन : डॉ. योगेन्द्र सिंह, सहायक अध्यापक, दिल्ली शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

द्वितीय सत्र - हिंदीतर भाषी राज्यों में हिंदी **04:00-05:30**

अध्यक्षता : प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, पूर्व निदेशक, भाषा इग्नू नई दिल्ली
विशिष्ट वक्ता : प्रो. तंकमणि अम्मा, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवंतपुरम
विशिष्ट वक्ता : प्रो. अरुण होता, अध्यक्ष हिंदी विभाग, पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय, कोलकाता
विशिष्ट वक्ता : प्रो. अंजना संधीर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
विशिष्ट वक्ता : डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा, पूर्व मुख्य प्रबंधक राजभाषा, सी.बी.आई., महाराष्ट्र
संचालन : डॉ. विपिन शर्मा, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, लंबगाँव (उत्तराखण्ड)

सांस्कृतिक प्रस्तुति - देश भक्ति रचनाओं की संगीतमय प्रस्तुति **05:45-07:30**

श्रीमती नीता गुप्ता, सदस्य, भारतेन्दु नाट्य अकादमी, उ0प्र0 लखनऊ एवं विद्यार्थी समूह हिंदी विभाग

अटल सभागार - 20 फरवरी 2024

तृतीय सत्र - शोध पत्र वाचन **09:00-11:00**

अध्यक्ष : प्रो. पवन अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
सान्निध्य : प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
सान्निध्य : प्रो. प्रज्ञा पाठक, हिंदी विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
संचालन : डॉ. गजेन्द्र सिंह, अध्यक्ष हिंदी विभाग, रा.म.वि., लक्सर, उत्तराखण्ड
डॉ. राजेश कुमार, अध्यक्ष हिंदी विभाग, रा.म.वि., बी.बी. नगर, बुलंदशहर

चतुर्थ सत्र - मीडिया सोशल मीडिया एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हिंदी **11:15-01:30**

अध्यक्षता : प्रो. गोविन्द सिंह, संकायाध्यक्ष अकादमिक, आई.आई.एम.सी. दिल्ली
विशिष्ट अतिथि : प्रो. जयमाला, संकायाध्यक्ष विज्ञान
विशिष्ट वक्ता : प्रो. सुभाष थलेडी, अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ
विशिष्ट वक्ता : प्रो. प्रशांत कुमार, निदेशक, पत्रकारिता विभाग
विशिष्ट वक्ता : श्री जवाहर कर्नावट, आर.एन.टी.यू., भोपाल
संचालन : डॉ. विद्या सागर सिंह, सहायक आचार्य (संविदा)

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
एवं
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

NAAC A++

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान

अटल सभागार - 19 फरवरी 2024

पंजीकरण : **09:30-11:00**

उद्घाटन सत्र : हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान **11:00-01:15**

अध्यक्षता : प्रो. वाई. विमला, पूर्व प्रतिकुलपति एवं सदस्य कार्यपरिषद, चौ. चरण सिंह वि.वि., मेरठ
मुख्य अतिथि : श्री राजेन्द्र अग्रवाल, माननीय सांसद, मेरठ हापुड़ क्षेत्र
विशिष्ट अतिथि : डॉ. माधुरी रामधारी, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस
विशिष्ट अतिथि : प्रो. सुनील कुलकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संसथान, आगरा
विशिष्ट अतिथि : प्रो. कुमुद शर्मा, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
बीज वक्तव्य : प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
सान्निध्य : प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, संयोजक/विभागाध्यक्ष
संचालन : डॉ. मोनू सिंह, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, छपरौली
पुस्तक विमोचन : शोध पुस्तक हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान एवं डॉ योगेंद्र सिंह की पुस्तक अमेरिकी प्रवासी हिंदी काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन

अटल सभागार - 20 फरवरी 2024

समापन सत्र : **02:30-04:00**

अध्यक्षता : प्रो. संजीव कुमार शर्मा, संकायाध्यक्ष कला/निदेशक अकादमिक
मुख्य अतिथि : डॉ. सोमेन्द्र तोमर, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश
विशिष्ट अतिथि : प्रो. जगत सिंह बिष्ट, पूर्व कुलपति, एस.एस.जे. विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा
विशिष्ट अतिथि : प्रो. वी.रा. जगन्नाथन, पूर्व निदेशक भाषा, इग्नू, नई दिल्ली
विशिष्ट अतिथि : प्रो. तंकमणि अम्मा, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवंतपुरम
विशिष्ट अतिथि : प्रो. अरुण होता, अध्यक्ष हिंदी विभाग, पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय, कोलकाता
विशिष्ट अतिथि : डॉ. मृदुल कीर्ति, वरिष्ठ साहित्यकार, ऑस्ट्रेलिया
सान्निध्य : प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, संयोजक/विभागाध्यक्ष
सत्र आख्या : डॉ. आरती राणा, सहायक आचार्य (संविदा)
संचालन : डॉ. अंजू, सहायक आचार्य (संविदा)

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
एवं
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

NAAC A++

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान

संरक्षक :

प्रो० संगीता शुक्ला, मा० कुलपति

सह-संरक्षक :

प्रो० संजीव कुमार शर्मा, संकायाध्यक्ष कला

19–20 फरवरी, 2024

संयोजक

प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी
वरिष्ठ आचार्य एवं अध्यक्ष
हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

आयोजन सचिव :

डॉ० अंजू

आयोजन सहसचिव :

डॉ० यज्ञेश कुमार, डॉ० आरती राणा

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
फोन नं० 0121-2772455, मो०नं० 9412207200

संगोष्ठी पत्र व्यवहार हेतु ई-मेल
hindiccsu@gmail.com
nclohani@yahoo.co.in
hindiseminar2023@gmail.com

हिंदी भाषा के विकास में विदेशियों और हिंदीतर भाषियों का योगदान

हिंदी अब अंतरराष्ट्रीय भाषा बनी है। इसका कारण है भारत और भारत के बाहर हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, बोलचाल, मीडिया तथा संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग बढ़ना। भारत के बाहर गिरमिटिया देशों में हिंदी पहले पहुँची और बाद में दुनिया के अन्य देशों में भी हिंदी का प्रयोग शुरू हुआ। देश की आजादी से पहले दुनिया के अनेक देशों में हिंदी पढ़ी, पढ़ाई जा रही थी और फिल्मों एवं टेलीविजन की दुनिया ने उसे घर-घर तक पहुँचाया। सोशल मीडिया के आने के बाद भाषा अब मोबाइल के जमाने में हथेली पर पढ़ी जाती है। तकनीकी के विकास ने भाषा के विकास को पंख लगा दिए हैं और अब क्लाउड में भाषा उड़ रही है। निश्चय ही यह सब इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है कि हम बोली गई बात को लिख सकते हैं, अनुवाद कर सकते हैं और लिखी हुई बात को सुन सकते हैं यह सब एक साथ हो रहा है।

आजादी के आंदोलन में हिंदी भाषा ने जो योगदान किया उससे हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने में संविधान सभा को मदद मिली। आजादी के बाद हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया इससे भारत भर में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, प्रशासनिक प्रयोग, अनुवाद तथा तकनीकी विकास में गति आई। मीडिया, फिल्मों तथा तकनीकी विकास ने हिंदी को दुनिया के सभी कोनों तक पहुँचा दिया। इस प्रकार भारत की राजभाषा हिंदी अब अंतरराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। हिंदी या भारतीय भाषाओं में तकनीक का प्रयोग विलंब से शुरू हुआ किंतु अब तकनीक और हिंदी साथ-साथ कदमताल कर रहे हैं, इससे वैश्विक आंकड़ों में हिंदी को निरंतर बढ़ते हुए देख रहे हैं। इस सबके पीछे भारत की भाषा नीति के साथ-साथ हिंदी की सरलता, सहज स्वीकार्यता तथा व्यापक शब्दकोश को महत्व देना होगा।

कभी हिंदी उत्तर भारत के कुछ राज्यों की भाषा थी। उससे भी पहले वह एक लोक बोली थी। अब अंतरराष्ट्रीय भाषा है। हिंदी के अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने में उन राज्यों का महत्वपूर्ण योगदान है जिनकी मातृ भाषा स्थानीय बोलियाँ अथवा भाषाएँ थीं। हिंदी के विकास में उन देशों का भी बड़ा योगदान है, जिनकी भाषा हिंदी नहीं थी, पर उन्होंने अपने देश में हिंदी को शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षण विषय के रूप में जोड़ा, हिंदी रचनाओं का अनुवाद किया और अपने देश की भाषा में लिखी महत्वपूर्ण रचनाओं को हिंदी में अनूदित किया। आज हिंदी ज्ञान और सूचना के तमाम माध्यमों में एक बड़ी भाषा है। वह भारत की संपर्क भाषा है और अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में दुनिया में व्यवहृत हो रही है, और भारत के तमाम राज्यों में शिक्षण माध्यम के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भाषा बनी।

भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषाओं के संबंध में अनेक प्रावधान किए गए हैं। यद्यपि त्रिभाषा सूत्र, बहुभाषिकता की चर्चा के बाद भी उसमें हिंदी सीधे उद्धृत नहीं है, परंतु आज हिंदी को भारतीय भाषाओं में जो स्वीकार्यता है उससे वह भारत की जनसंपर्क की भाषा बन गई है। इसे भारत के किसी कोने तक आवाजाही में प्रयोग किया जा सकता है और इससे अपनी बात समझाई और समझी जा सकती है। आजादी के 75 वर्ष के बाद हिंदी का मूल्यांकन विविध रूपों में हो रहा है, इस संगोष्ठी में हम हिंदी के बढ़ते और बदलते स्वरूप पर चर्चा करेंगे तथा विभिन्न माध्यमों सहित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर आए बदलावों और भाषा नीति के परिप्रेक्ष्य में भारत में उसकी स्थिति का मूल्यांकन करेंगे। यह संगोष्ठी विदेशों, भारत के राज्यों, मीडिया, सोशल मीडिया सहित अनेक रूपों में हिंदी प्रयोग की स्थिति पर चर्चा के लिए है।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ की स्थापना सन् 1965 में हुई। पूर्व में मेरठ विश्वविद्यालय के नाम से विख्यात व वर्तमान में भारत रत्न चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नाम से ख्याति प्राप्त इस विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1965 से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा सुलभ कराने के उद्देश्य से की गई। विश्वविद्यालय में खेल तथा शैक्षणेतर गतिविधियों के साथ सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं तथा सौंदर्यकरण एवं पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से यह भारत का विशिष्ट विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय 219 एकड़ में फैला हुआ है और भव्य प्रेक्षागृह, सुविधायुक्त छात्रावास, योगशाला, भव्य खेल के मैदान, विशाल पुस्तकालय, अतिथि गृह, चिकित्सालय, डाकखाना, बैंक तथा कम्प्यूटर प्रयोगशाला से संपन्न विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के लिए ज्ञानार्जन का केंद्र है। विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत में अपनी शैक्षणिक एवं शोध उपलब्धियों से विशेष स्थान प्राप्त किया है। अनेक महत्वपूर्ण वैश्विक मूल्यांकन संस्थाओं के साथ-साथ मार्च 2023 में नैक द्वारा विश्वविद्यालय को 3.66 अंकों के साथ ए ++ मूल्यांकित किया है। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि अनेक शोध संस्थाओं, मूल्यांकन संस्थाओं द्वारा विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, भारत और उत्तर प्रदेश में विशिष्ठ विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता दी जा रही है। वैश्विक स्तर पर भी विश्वविद्यालय के अनेक महत्वपूर्ण विभाग न केवल जाने जाते हैं अपितु उनके शोध, लेखन, शिक्षण का लाभ अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों को प्राप्त हो रहा है। इस उपलब्धि का श्रेय विश्वविद्यालय के अकादमिक वातावरण और प्रशासनिक क्षमता को जाता है।

परामर्श समिति :

संकायाध्यक्ष कला-प्रो. संजीव कुमार शर्मा
संकायाध्यक्ष शिक्षा-प्रो. विजय जायसवाल
संकायाध्यक्ष विज्ञान-प्रो. जयमाला
अध्यक्ष समाजशास्त्र-प्रो. आलोक कुमार
अध्यक्ष इतिहास-प्रो. विघ्नेश त्यागी
अध्यक्ष अर्थशास्त्र-प्रो. अतवीर सिंह
अध्यक्ष मनोविज्ञान-प्रो. संजय कुमार
अध्यक्ष उर्दू विभाग-प्रो. असलम जमशेदपुरी
समन्वयक संस्कृत विभाग-प्रो. वाचस्पति मिश्र
समन्वयक ललित कला विभाग-प्रो. अलका तिवारी
समन्वयक भूगोल विभाग-प्रो. दीपशिखा
अध्यक्ष रूसी एवं विदेशी भाषा विभाग-डॉ. एस.के. दत्ता
अध्यक्ष उद्यान विभाग-प्रो. जितेन्द्र ढाका
अध्यक्ष रसायन विज्ञान-प्रो. आर.के. सोनी
अध्यक्ष सांख्यिकी-प्रो. हरेकृष्ण
अध्यक्ष भौतिक विज्ञान-प्रो. अनिल मलिक
अध्यक्ष जन्तु विज्ञान-प्रो. बिंदु शर्मा
अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान-प्रो. विजय मलिक
अध्यक्ष गणित-प्रो. शिवराज पुण्डीर
निदेशक पत्रकारिता-प्रो. प्रशान्त कुमार
निदेशक शोध-प्रो. बीरपाल सिंह
अधिष्ठाता छात्र कल्याण-प्रो. भूपेन्द्र सिंह
मुख्य छात्रावास अधीक्षक-प्रो. दिनेश कुमार

आयोजन समिति :

सहायक आचार्य (संविदा) हिंदी
डॉ० अंजू - 7618330081
डॉ० विद्यासागर सिंह-8171803589
डॉ० प्रवीन कटारिया-8077703608
डॉ० आरती राणा-8650832753
डॉ० यज्ञेश कुमार-7599231973

शोधार्थी हिंदी
कु० पूजा-8859348851
विनय कुमार-7351263472
अरशदा रिज़वी-6395432859
अंकिता तिवारी-7237075463
कु० पूजा यादव-8130881493
पवन गोस्वामी-7456080801

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

प्रारंभ में विश्वविद्यालय में एम.फिल्. और पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए। हिंदी भी पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाई गई। विभाग के रूप में हिंदी विभाग की स्थापना मई 2002 में हुई। हिंदी विभाग की स्थापना के पश्चात् यहाँ एम0ए0 हिंदी, एम0ए0 व्यावसायिक हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, एम0 फिल् तथा पीएच0 डी0 (हिंदी) के पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुए। वर्तमान में बी0ए0 संस्थागत पाठ्यक्रम का भी प्रारम्भ हुआ है। विभाग की स्थापना से अब तक 'प्रवासी हिंदी साहित्य' तथा 'कौरवी लोक साहित्य' को स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। देश में प्रवासी हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम सर्वप्रथम इस विभाग ने प्रारंभ किया जिसे आज देश के अन्य शिक्षण संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों ने अपनाया है। विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के साथ एमओयू किया गया है जिससे राष्ट्रीय स्तर पर विभाग और संस्थान एक साथ मिलकर कार्य करेंगे।

हिंदी विभाग ने स्थापना वर्ष के साथ ही अकादमिक उपलब्धियाँ, शैक्षणिक गुणवत्ता एवं साहित्यिक वातावरण से विश्वविद्यालय में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। साथ ही राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी परचम लहराया है। इन इक्कीस वर्षों में हिंदी विभाग ने शोध, प्रकाशन कार्य, प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार मिला। हिंदी विभाग को कम्प्यूटर लैब तथा तकनीकी उपकरणों के प्रयोग से देश के कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की अग्रिम पंक्ति में स्थान मिला है। हिंदी विभाग को प्रदेश सरकार द्वारा उत्कृष्ट अध्ययन केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। विभाग को भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के अंतर्गत पाण्डुलिपि स्रोत केन्द्र के रूप में चयनित किया गया। विभाग में हिंदी दिवस के अवसर पर विभागीय पत्रिका मंथन प्रकाशित होती है। यह विश्वविद्यालय का पहला विभाग है जिसनें 2008 से अपना ऑनलाईन ब्लॉग manthanvicharpatrika.blogspot.com प्रारम्भ किया है।

विभागाध्यक्ष सहित विभाग के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के साथ दूरदर्शन तथा रेडियो के कार्यक्रमों में प्रतिभागिता की जाती रही है। विभाग द्वारा राष्ट्रमण्डल खेलों में हिंदी प्रयोग को लेकर ऐतिहासिक जन अभियान छेड़ा गया परिणामस्वरूप हिंदी को आयोजन में वांछित प्रतिष्ठा मिली। विभाग को अब तक विभिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा 05 शोध परियोजनाएं प्राप्त हुई हैं। विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, नई दिल्ली, उच्च शिक्षा विभाग, उ0प्र0 शासन, लखनऊ द्वारा अनुदानित परियोजनाएँ प्राप्त हुई हैं जिसमें शोधपरक मूल्यांकन, चिंतन, विश्लेषण द्वारा नवीन स्थापनाओं को विभाग द्वारा प्रकाश में लाया गया है।

देश का यह अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ हिंदी साहित्यकारों के लिए 'साहित्यकार कुटीर' की स्थापना हुई। यह कुटीर अपने कलात्मक रूप मे हिंदी प्रेमियों, शोधार्थियों, देश-विदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

विभागाध्यक्ष प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी विभाग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कराने के लिए प्रयासरत हैं। प्रो. लोहनी को स्विट्जरलैंड तथा चीन में आई.सी.सी.आर. चेयर के रूप में कार्य करने का अवसर विदेश मंत्रालय द्वारा दिया गया तथा उन्होंने इस अवसर का उपयोग हिंदी और भारतीय संस्कृति को व्यापक मंच पर ले जाने में किया।

हिंदी विभाग के 70 विद्यार्थियों ने नेट, 34 विद्यार्थियों ने जे0आर0एफ0, 04 विद्यार्थियों ने स्लैट तथा 05 विद्यार्थियों ने राजीव गांधी फेलोशिप प्राप्त की है और शैक्षणिक तथा शोध विभाग के रूप में अपनी विशिष्ट स्थिति दर्ज की है।

हम इस आयोजन में हिंदी की अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर एक समग्र मूल्यांकन में आपकी महत्वपूर्ण प्रतिभागिता चाहते हैं। आशा है आपके मूल्यवान विचारों से हम लाभान्वित होंगे और हिंदी विकास की गति को आपके विचारों से नया आकार मिलेगा, जिससे हिंदी वैश्विक स्तर पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगी।

आप सबकी उपस्थिति और सहभागिता के लिए आभार सहित!